१२. धन धन भाग है

मैंने जिसकी आस की मनमे, आज सुदिन वो आयो ॥धृ.॥
मोरे मनकी आस पुरायो, मेहेर दरश दिखायो ॥

धन धन भाग है धन्य जनम मोरा, आज सफल करायो ।
आज मिली सागरसे सरिता, अपने आप भुलायो ॥१॥

देखत नैन हुवे हैं बाँवरे, आज अनुप सुख पायो ।
मोह लियो मन सुंदर मुखने, गयो सुधबुध बिसरायो ॥२॥

Scanned by CamScanner

साच कही तोरि महिमा सबने, तेरो अंत न पायो ।
ज्ञानसे जान सके ना कोई, प्रेमसे सबने पायो ॥३॥

किसबिध कहूँ मैं मोरे जियामें, आनंद नहीं समायो ।
'मधुसूदन' कहे बार बार यही, भाग बड़े मैं पायो ॥४॥

Scanned by CamScanner